शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

बौद्ध साहित्य में संगीत की प्रासंगिकता

प्राप्तिः 27.02.2022
स्वीकृतः 15.03.2022

डॉ० संगीता गौरंग
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग
के०वी०ए० डी०ए०वी० कॉलेज फॉर वुमन
करनाल, हरियाणा
ईमेलः *sangeetagorang@gmail.com*

सारांश

बौद्ध धर्म जो कि हिन्दू धर्म से ही पनपा हुआ रुप हैं। यह भारत में ही पला, बढ़ा और देश विदेशों में इस धर्म का काफी प्रचार हैं। हिन्दु धर्म में आई हुई कुरीतियों को दूर कर नया धर्म बना जिसे बौद्ध धर्म के नाम से जाना जाने लगा। इस धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध ने सर्वसाधारण जनता से अनुरोध किया कि वे अपने धर्म का मार्ग स्वयं खोजें, सुनी–सुनाई बात पर विश्वास न करें तथा स्वंय अपना प्रकाश बनें। इसके अतिरिक्त उन्हौनें एक ओर समाजिक कुरीति कर्मकाण्ड का भी घोर विरोध किया। जिसके फलस्वरुप एक सरल, साधारण व शुद्ध धर्म की प्राप्ति हुई। महात्मा बुद्ध ने चार आर्य सत्यों को खोज कर कुछ नैतिक नियमों की सृष्टि की।

1. *किसी प्राणी की हत्या नहीं करनी चाहिए।*
2. *उस वस्तु को नहीं लेना चाहिए जो उसे नहीं दी गई।*
3. *झूठ नहीं बोलना चाहिए।*
4. *मादक द्रव्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।*
5. *व्याभिचार से सदा दूर रहना चाहिये।*

बौद्ध साहित्य की व्यक्तिगत सामग्री का जहाँ तक प्रश्न हैं, वह मूल में हो या अनुवाद में, मूलतः पालि, संस्कृत (शुद्ध और मिश्रित), तिब्बती, चीनी भाषाओं में उपलब्ध हैं। बौद्ध विषयक ग्रन्थ एंव मूल साहित्यिक अनुवादित ग्रन्थों से प्राप्त मात्र जानकारी इस शोद्ध कार्य प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता हैं।

बौद्ध साहित्य में उद्धरित सांगीतिक प्रसंग

बौद्ध वाड्मय में साहित्य का वह पक्ष सम्पन्न था जो आध्यात्मिक साधना के लिये बाधक न हो। गौतम बुद्ध संगीत के उस रुप को कतई पसन्द नहीं करते थे। जिससे मानव का नैतिक स्तर गिरता हो। वह संगीत को ईश्वर की दिव्य आभा के समान पवित्र समझते थे।

बौद्ध युगीन नारियों को विशेष स्थान दिया गया था। इस युग में अनेक भिक्षुणियों ने संगीत के माध्यम से अपने ईष्टदेव को पहचाना। "जातक" में उद्धरित कुछ पंक्तियां इस प्रकार से हैंः– "जब स्त्रियाँ गौतम बुद्ध के दर्शन के लिये जाती थी तो रम्य गुणगान करती जाती तथा गाती हुई बुद्ध की आदरपूर्वक आरती उतारती थी। उन गीतों में ऐसी संगीतिक स्फूर्ति होती कि मानव की प्रस्तुत वृत्तियाँ स्वाभाविक रुप से जागृत हो जाती थी।" [1]

थेरी गाथा में 522 गीतों का संग्रह हैं। ये गाथाएं वस्तुत मानव जीवन की कटुताओं तथा विषमताओं के गम्भीर अनुभव के उपरान्त उपलब्ध उन पर विजय के उल्लासपूर्ण व्यक्तव्य हैं और ये सम्पूर्ण गाथायें संगीतात्मक हैं। [2]

जातकों के इस प्रसंग में कहा गया हैं कि – गुत्तिल नामक बोधिसत्व उत्तम गायक था और काशी के राजा ब्रम्हदत्त का नौकर था। उनके पास उज्जयानि का मुशिल नामक गायन विशेष ज्ञान की जिज्ञासा से आया। उसने उत्तम ज्ञान प्राप्त कर लिया था। राजा ने दोनों की स्पर्धा का निश्चय किया। गुत्तिल वृद्ध था। उसे अपनी विजय की शंका उत्पन्न हुई और वह इन्द्र की स्तुति के लिये जंगल चला गया। इन्द्र ने प्रसन्न होकर ये वर दिया कि स्पर्धा में वीणा की एक बार टूट जाने पर भी वीणा बजती रहेगी। गुत्तिल ने स्पर्धा में शिष्य को जीत लिया। इस प्रसंग में "सप्त तन्त्री" वीणा के उल्लेख से यह अनुमान हो जाता हैं कि उस समय सात तारों की वीणा का भी प्रचार रहा होगा।[3]

ग्गमाल जातक में यह पंक्तियाँ उद्धरित हैं कि "काशी नरेश ने राजकुमारी के विवाह पर 26000 नृतकियों को निमन्त्रित किया था। [4] इसके अतिरिक्त प्रसंगवशात् राज्य की कुशल गणिकाओं को गायन, वादन के लिये आमन्त्रित किया था। [5] जातक युग में नटी को हेय दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि वे सौन्दर्य प्रसाधन तथा कलासम्पन्नता के माध्यम से देह विक्रय करने में संकोच नहीं करती थी। कुसजातक में कथा हैं कि राजा अपनी धर्मपत्नियों से सन्तान न होने पर उन्हे धर्मनटी बनाकर बाहर भेज देता था, जिससे वह अभीष्ट पुरुष से गर्भधारण कराने में समर्थ हो सकें। [6]

गौतम बुद्ध ने गृहत्याग करने से पूर्व नारी स्त्रियों के विकारों को प्रत्यक्ष रुप में देखकर कामनाओं से विरक्त होने का निश्चय किया। इन विकारों का उल्लेख निम्मलिखित प्रकार से था :–

"बोधिसत्व बड़े ही खुशी की अनुभूति करते हुये अपने महल में विचर रहे थे। कुछ देर बार वे पलंग पर जा बैठे। उसी समय अलंकारो से विभूषित नृत्य, गीत आदि में दक्ष, देवकन्या समान अतीव सुन्दर स्त्रियों ने अनेक प्रकार के वाद्यों को लेकर कुमार को खुश करने के लिये नृत्य, गीत और वादन प्रारमी किया। परन्तु बोधिसत्व नृत्य में रत न हो, वे सो गये। यह देखकर वे सुन्दर स्त्रियाँ भी सो गई। जब बोधिसत्व की आँख खुली तो उन्हौनें पाया कि उनमें से कई नारियों के मुंह से कफ निकल रहा था, किन्हीं का शरीर लार से भीग गया था, कोई दाँत करकरा रही थी, कोई बड़बड़ा रही थी, कईयों के मुंह खुले थे। [7] इस प्रकार के विकारो को देखकर बुद्ध और भी विरक्त हो गये व उन्हौं गृहस्थ जीवन त्यागनें का फेसला किया। इस प्रसंग में यह स्पष्ट होता हैं कि बौद्ध कालीन संगीत आरम्भ से ही आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर था। बौद्ध धर्म में गायन, वादन तथा नर्तन का प्रचार बराबर मात्रा में होता रहा। गौतम बुद्ध ने केवल मनोविकार उद्दीपन करने वाले अश्लील संगीत से अलिप्त रहने की आज्ञा दी हैं। [8]

महायानी सूत्र में निर्वाण को अधिक फलदायी बनाने के लिये धातु पूजा, स्लूप–पूजा, मूर्तिनिर्माण, भित्ति–चित्रों में तथागत जीवन का अंकन, पुष्प गन्धों से उनकी पूजा, बाघ–भेरी, शंख पुदाभि आदि से बुद्ध पूजा, वीणा ताल, पणव, मृदंग, वंशी आदि को बजाकर श्रद्धा–भक्ति प्रदर्शित करना शामिल हैं। साथ ही यह भी कहा गया हैं कि यदि जो पूर्वोक्त श्रद्धा–भक्ति प्रदर्शित नहीं करेगा वह नरकगामी बनेगा। [9] इस प्रकार बौद्ध संगीत निर्वाण प्राप्ति का मार्ग बताया गया हैं।

"महावग्ग विनय पिटक" में एक प्रसंग में बुद्ध अपने शिष्य सोम को उपदेश देते हैं। इस प्रसंग में वीणा का उल्लेख प्राप्त होता हैं।

"एंव भद्द तवाति खो पंचसिक्खें गंधव्वसुतो सक्कस्य देवानमिदरुस पटिस्तु, त्वा बुलुवपण्डुवीण आदाय सकमत ठितों खो पंचसिक्खें गंधव्वपुत्तों अस्सा बेसि" [10]

उपयुक्त पंक्तियों में "पंचसिक्ख गान्धर्व पुत्र हाथ में पाण्डूवीणा लेकर इन्द्र की स्तुति करता हैं तथा बेलुव अर्थात् बीली के फल की बनी वीणा के तुम्बे बीती फल के कोठा के बने हुये दिखाई पड़ता हैं।

स्वयं बुद्ध संगीत विघा में कुशल थे और वीणा भी बजाते थे। [11]

ईसा से 100 वर्ष पूर्व ग्रीक राजा मिलिंद एक विद्धान्, गायक और कलाओं का मर्मज्ञ था। बौद्ध भिक्षुक के साथ उसके संवाद में वीणा एंव वीणा के अंग, प्रत्यंग के नाम (घोड़ी, चमड़ा चोकठा, तबकड़ी, खुंटी, तार, गज इत्यादि) भी प्राप्त होते हैं। [12] यह संवाद सिन्धु नदी के आसपास के प्रदेश में हुआ होगा।[13]

बौद्ध युग में नाट्य अथवा नाटक के लिये "पैक्ख" अथवा "प्रेक्ष" संज्ञा दी हैं। नाट्य के दिग्दर्शक को नटाचार्य कहा जाता था। प्रमुख नट के लिये "नट गामणी" संज्ञ दी हैं। नटवर्ग विभिन्न नाटकों से जनता का मनोरंजन करता था। [14]

गुप्तिल ने गान्धर्व कुमार को सात तारो वाली वीणा (सप्ततन्त्री वीणा) बजाने में निपूर्ण होने का वर्णन प्राप्त हैं। यह वीणा "चित्रावीणा" के सदृश थी। ऐसी भरतकृत "नाट्यशास्त्र" में वर्णित हैं। भरत ने कहा हैं कि चित्रवीणा में सात तारें अनुकूल थी तथा विपंची नौ तारों के साथ थी। इन दो वीणाओं के नाम "रामायण" और "महाभारत" में भी प्राप्त होता हैं। जातकों की सप्ततन्त्री वीणा और नाट्यशास्त्र की चित्रावीणा आधुनिक सितार के अग्रवती हैं। [15]

लंकावतार सूत्र में एक विधान हैं कि राक्षसों के राज रावण ने पुष्पक विमान में बैठे हुए भगवान की तीन बार प्रदक्षिणा की। तत्पश्चात्, दंड से बजता हुआ "तुर्य" वाद्य को शढ़ज, गन्धार, धैवत, निशाद, मध्यम और कौशिक इत्यादि स्वरों में ग्राम मूच्छनादि सहित मिलकर उस वाद्य की स्वरावली के साथ अपना स्वर मिलाकर गाथा और गीत को गाने लगा। [16] उपरोक्त उल्लेख से स्पष्ट होता हैं कि प्राचीन बौद्ध वाड्मय के समय में ग्राम रागों का प्रचार था।

"दिव्यावदान" एक बौद्ध ग्रंथ हैं जिसके एक श्लोक में किन्नर कन्या के रुप लावग्य की चर्चा में इन तीनों विधाओं का अनायास ही प्रस्फुटन हुआ हैंः–

"ततष्चस्त्रः किन्नरकन्या निर्गमिश्यती अभिरुपा
दर्शनीयाः प्रासादिकारचतुर्थमाधुर्यसम्पन्नः।
सर्वाग्ड. प्रत्यड्. गोपेतः परमरुपामिजातः सर्वालंकारविभूषिता
हंसतरमित परिचारित नृतगीतवादित्र कलास्वामिज्ञा"।। [17]

इस ग्रन्थ में गायन के विषय में तो अनेक प्रसंग होते हैं। एक प्रसंग में "कुणाल" गीत–गायन में प्रवीण था। उसके गायन की एक अलग पहचान थी। ***"न सत्वेश किं गीतस्य कुणालसदृशी ध्वनिः"*** [18] या ***"गीतं कुणालेन मयि प्रसंक्त"।*** [19]

एक अन्य प्रसंग जिसमें किन्नर जाति के नर–नारी ही संगीत समायोजनों को शोभित करते थे और वे व्यावसायिक संगीतज्ञ भी थे।

वंशैस्तालखैः संगीतमधुरैः प्रच्छेदसंपादिभिः।
संगीताहितमचेतसः प्रमुदिता गायन्तयमी किन्नराः।। [20]

इस प्रकार दिव्यावदान ग्रन्थ में किन्नरों का गायन क्षेत्र में पक्षता का प्रमाण प्राप्त होता हैं।

प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों में भत्ति (भक्ति) शब्द का उल्लेख मिलता हैं। गुत्तिल द्वारा की हुई इन्द्र की स्तुति, भिक्षु भिक्षुणियों के भाव प्रणम गीतों का संग्रह (थेरी–थेर गाथा) अश्वघोष द्वारा रचित स्तुतियों, पंचशिख नामक गान्धर्व पुत्र के द्वारा वीणा के साथ की हुई स्तुति तथा बौद्ध मन्दिरों में स्तुतियों के गायन और वृत्ति के गर्भ में भक्ति की स्फुरणा दिखाई देती हैं।

बौद्धकालीन वाद्य

बौद्ध साहित्य में तत् वितत, धन तथा सुषिर इन चतुर्विध वाद्यों का प्रचुर मात्रा में उल्लेख पाया जाता हैं। तत वाद्यों के अन्तर्गत निम्नलिखित वाद्यों का नामनिर्देश उपलब्ध हैं वीणा, परिवादिनी, विपंची, वल्लकी, महती, नकुली, कच्छपि, तुम्बवीणा इत्यादि। इस प्रकार का संकेत हमें कई ग्रन्थों से प्राप्त होता हैं। "कुणालावदानम्" में राजकुमार कुणाल गायन के साथ स्वयं ही वीणा का वादन करते थे।

"गीत कुणालेन मयि प्रसक्त
वीणास्वर चैव श्रुतिष्विरेण।
अभ्यागतो अपहि गृहनुकचिन्न,
चेच्छति द्रष्टमंय कुमारः"।। [21]

इसी प्रकार राजा रुद्रायण वीणावादन करते थें और उनकी मार्या चन्द्रप्रभा नृत्य किया करती थी।

"रुद्रायणी राजा वीणायं कृतावी चन्द्रप्रभा देवी नष्त्ये।
यादवपरेण समयेन रुद्रायण राजा वीणा,
वादयति चन्द्रप्रभा देवी नृत्यति।। [22]

वीणा की तुम्बी के लिए "बीलीफन" का उपयोग किया जाता था।[23] और उसमें लगी लकड़ी एक विशेष वृक्ष से लिया जाता था।

"वीणाविघां वाद्य भाण्डवृक्षा वेणवल्लरिसुघोषका" [24]

वीणा उस समय का प्रियतम वाद्य रहा हैं। वीणा वाद्य के साथ गाये गये सुमधुर संगीत ने बुद्धदेव जैसे एक वीतराग महात्मा को प्रभावित किया हैं। इस प्रसंग में यह कथा प्रचलित हैं – "पंचसिख गन्धर्व, जो तुम्बरुकन्या सूर्यवर्वसा का प्रेमी था, अपने प्रमाराधन में विफल होकर वीणा पर करुण गीति का गान करते लगा। गीत तथा वीणा के स्वरो का एकान्त तादाम्य सुनकर स्वयं भगवान् बुद्ध भी गीत की प्रशंसा करने लगें।"[25]

जातक काल में वीणावादकों की प्रतियोगिताएं हुआ करती थी, जिसमें विजेता से स्पष्ट होता हैं। इस संदर्भ में कथा इस प्रकार से हैं – "उज्जैनी के वीणावादक मुसिल तथा वाराणसी के राजवादक गुत्तिल के बीच ईश्या आरम्भ हुई। कुसिल ने गुत्तिल से वीणा के गूढ़तम रहस्यों को पाकर उन्हीं को पराजित करने का संकल्प किया। राजसभा में स्पर्धा के अन्तर्गत गुत्तिल ने वीणा को सप्त तन्त्रियों में से एक को तोड़कर अवशिष्ट तन्त्रियों पर वादन जारी रखा स्पर्धा में

अन्तिम क्षणों में सभी तार तोड़नें के पश्चात् वीणा के दण्ड से ही ध्वनियां गूंजती रही।[26] इससे यह तथ्य स्पष्ट होता हैं कि उस काल में वीणा तन्त्रियों पर एकाधिक स्वरों का वादन करने की प्रणाली प्रचलित रही हो। अवनद वाद्यों में तन्त्रियों पर एकाधिक स्वरों का वादन करने की प्रणाली प्रचलित रही हो। अवनद्ध वाद्यों में मृदंग, प्रणव, भेरी, दिन्दिमत्रभ (डिन्डिम) तथा दुन्दुभि का उल्लेख कई ग्रन्थों में प्राप्त होता हैं।[27]

दिव्यावदान में उपयुक्त अवनद्ध वाद्यों के अतिरिक्त "पटह" और "मुरज" वाद्यों का भी उल्लेख मिलता हैं। इन सब वाद्यों का प्रयोग समूहगान या नृत्य में सम्भवतः होता था।

"मौलिधराणाभावासों वीणावेणुपग वसुघेषक
वल्लरीमष्दंगभेरीपटहशेख निर्नादिता" [28]

इस बात की पुष्टि इस स्थल पर किन्नरों द्वारा अनेक बाजों के साथ अवनद्ध वाद्य की संगीत से मिलता हैं कि नृत्य गीत के साथ सामूहिक आयोजनों में इन वाद्यों का प्रयोग होता था।[29]

भारतीय संस्कृति में दान की महिमा कई ग्रन्थों में उपलब्ध होती हैं। दान या तो मन्दिरों के व्यय के लिये अथवा ब्राह्मण वर्ग को दिया जाने का उल्लेख प्राप्त होता हैं। बौद्ध ग्रन्थ "दिव्यावदान" में "वाद्यदान" का उद्धरण प्राप्त होता हैं।

"घटादान ददाति मनोस्वरविपाक प्रतिलाभसंवर्तनीयम।
वाद्यदानं ददाति ब्रह्ममास्वरनिर्घोविपाक प्रतिला भंसवर्तनीयम्।। [30]

वाद्य दान के अवसर सम्भवतः वे होते थे, जब शिष्य गुरु से संगीत शिक्षा प्राप्त कर लेता था और गुरु दक्षिणा के रुप में गुरु को वाद्यदान करता हो। ऐसा भी अनुमान लगाया जा सकता हैं कि महाराजा वादकों से प्रसन्न होकर उन्हें वाद्यदान करते हों।

सुषिर वाद्यों में शंख, तूर्य, श्रंग, वेणु, सुघोषक आदि का उल्लेख अन्यान्य ग्रन्थों में प्राप्त होता हैं।[31] "दिव्यावदान" ग्रंथ में मुख्यतः वेणु (बाँसुरी), शंख एंव तूर्य का उल्लेख प्राप्त होता हैं। वेणू आजकल की बाँसुरी का ही रुप हैं। इस वाद्य को कहीं वेणु और कहीं वंशी कहा गया हैं।

"मौलिधराणाभावासों वीणावेणुपगवसुघोषक [32]

अथवा

"वंशैस्तालरवैः संगीतमधुरैः प्रच्छेदसंपादिभिः।
स्ंगीताहितचेतसः प्रभुदिता गायन्त्यमी किन्नराः।। [33]

इन उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता हैं कि सुषिर वाद्यों में बंशी में वंशी का ही अधिक प्रचलन था। इसी समुधुर आवाज की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई हैं। इस वाद्य के वादन में "किन्नर" लोग ही सिद्वहस्त थे। भेरी का प्रयोग आनन्दोत्सव पर होता था। एक प्रसंग में – "मनोहरा के साथ सुवशकुमार के हस्तिनापुर लौटने के समाचार सुनकर आनन्द प्रदर्शित करने के लिये भेरी बजाई गई।" [34] तूर्य वाद्य भी अनेक कामूक क्रीडाओं के समय बजाया जाता था। [35]

घनवाद्यों में घण्टा, जल्लदी, झल्लरी तथा कान्स्य ताल का प्रतीक था। इनमें मुख्यतः घंटा एंव ताल मुख्य हैं। घंटा विभिन्न अवसरों पर बजाया जाता थां किसी भी आयोजन के प्रारंभ में घटाघोष किया जाता था। घंटें का उल्लेख अन्य वाद्यों के साथ नहीं मिलता, जिससें ऐसा प्रतीत

होता हैं कि घंटा वाद्यों के साथ नहीं बजाया जाता रहा होगा। इन वाद्यों के अतिरिक्त दुन्दुभि का उल्लेख मिलता हैं, परन्तु यह वाद्य देवों का ही रहा।

"....अंतरिक्षेत्र देव दुन्दुभयों अभिनदन्ति" [36]

इस प्रकार बौद्ध वाड्०मय के संगीत में चतुविध्र वाद्यों तत्, अवनद्ध धन तथा सुषिर का प्रयोग मात्रा में प्राप्त होती हैं।

अन्ततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बुद्धकालीन संगीत बहुत अधिक विकसित नहीं था। किसी–किसी ग्रंथ में विशेष प्रसंगों के लिये संगीत का उल्लेख मात्र किया गया हैं। इस विषय में हमें उपलब्ध ग्रन्थों में विस्तृत जानकारी प्राप्त न होने से उक्त सांक्षिप्त सामग्री से ही सन्तोष करना पड़ा।

संदर्भ

1. विनयवत्थु महावाण – जातक–भाग–5, (संण आनन्द कौसल्यायन), पृष्ट **205.**
2. बौद्ध साहित्य की सांस्कृतिक झलक – परशुराम चतुर्वेदी, पृष्ट **79** *(थेरी गाथाओं में भिक्षुणी जीवन की झाँकी)*
3. गुत्तिल जातक–सं आनन्द कौसल्यायन, जातक– भाग–2, पृष्ट **172–176.**
4. जातककालीन भारतीय संस्कृति – वियोगीकृत, पृष्ट **24.**
5. जातककथा – आनन्द कौसल्यायन – भाग–1।
6. जातककालीन भारतीय संस्कृति – वियोगीकृत, पृष्ट **72.**
7. बुद्धचर्या – राहुल सांकृत्यायन पृष्ट **9.**
8. Dialogues of Buddha and Brahnjala Sutta, Page- **6.**
9. सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रम् – सं पीण एलण वैद्य, पृष्ट **34–43.**
10. दीर्घ निकाय – पाल टेस्ट सोसायटी (भाग–2), पृष्ट **264.**
11. ललित विस्तर – सण पीण एण वैद्य, पृष्ट **156.**
12. Questions of King Milinda, Page- **84.**
13. Hindu India, Page- **100.**
14. History of Sanskrit Poetics – Kande, Page- **232.**
15. नाट्यशास्त्र – आचार्य भरत मूनि।
16. लंकावतार सूत्रम, पृष्ट **3.**
17. दिव्यावदान – संण पण एलण वैद्य, पृष्ट **79.**
18. दिव्यावदान – संण पैण एलण वैघ, (कुणालववानम्), पृष्ट **267.**
19. वहीं, पृष्ट **267.**
20. वहीं, पृष्ट **205.**
21. दिव्यावदान (कुणालवदानम्) सं. पण एलण वैद्य पृष्ट **267.**
22. वहीं (रुद्रयणावदानम्) पृष्ट **470.**
23. दीर्घनिकाय – प्रण पाली टेस्ट सोसाइटी (भाग–1), पृष्ट **267.**

24. दिव्यावदान (मान्धातावदानम्), सं पीण एलण वैद्य, पृष्ट **137.**
25. दीर्घनिकाय – प्रण पाली टेस्ट सोसाईटी, पृष्ट **268.**
26. जातक – (मुसिल जातक), आनन्द कौसल्यायन, पृष्ट **112.**
27. जातक– भाग–1, आनन्द कौसल्यायन, पृष्ट **79.**
28. चन्द्रप्रभबोधीसत्वचर्यावदानम् – संण पण एण वैद्य पृष्ट **185.**
29. वहीं, पृष्ट **288.**
30. दिव्यावदान – संण पीण एलण वैद्य, पृष्ट **426.**
31. महावस्तु – भाग–3, पृष्ट **165.**
32. दिव्यावदान – (चन्द्रप्रभबोधिसत्वचर्यावदानम्), पृष्ट **185.**
33. वहीं, पृष्ट **502.**
34. दिव्यावदान (सुघनकुारावदान), पीण एलण वैद्य, पृष्ट **300.**
35. वहीं – (कोटिकर्णावदान), पीण एलण वैद्य, पृष्ट **2.**
36. वहीं, पृष्ट **126–128.**
37. विनयवत्थु महावाण – जातक–भाग–5, (सं़ आनन्द कौसल्यायन), पृष्ट **205.**